

# गेहूं और गुलाब

श्रीरामवृक्ष बेनीपुरी

गेहूं और गुलाब  
लाल तारा सतरंगा धनुष



श्रीरामवृक्ष बेनीपुरी

## अपनी बात

पूज्य बाबूजी की तीन अमर कृतियाँ-‘गेहूँ और गुलाब’, ‘लाल तारा’ और ‘सतरंगा धनुष’ एक जिल्द में आपके सामने प्रस्तुत हैं। आप खुद देखें- किस प्रकार बाबूजी की लेखनी ‘चपल खंजन सी फुदकती चलती है’ और ‘लेखनी नहीं, जादू की छड़ी’ है उनके हाथों में।

ये तीनों पुस्तकें बाबूजी ने मेरे सबसे बड़े भैया स्वर्गीय देवेंद्र बेनीपुरी को दानस्वरूप 1964 में दी थीं। बड़े भैया को बाबूजी बहुत मानते थे और बड़ी भाभी सुशीला ने बाबूजी के स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान उनकी जेल यात्राओं के क्रम में मेरी माँ के साथ विपदाएँ झेली थीं-परिवार को संबल दिया था। इसलिए ही मैं इस पुस्तक को उन्हें समर्पित कर रहा हूँ।

इसके प्रकाशन का श्रेय मेरे भतीजे रतन बेनीपुरी को है, जो मेरी ही तरह बाबूजी की अनुपलब्ध पुस्तकों के प्रकाशन को प्रतिबद्ध हैं। उन्हें बहुत-बहुत आशीर्वाद।

हमने बाबूजी के साहित्यिक, राजनैतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक अवदानों को जनमानस तक पहुँचाने के लिए ‘बेनीपुरी चेतना समिति न्यास’ का गठन किया है। यह पुस्तक भी उसी न्यास की प्रेरणा से प्रकाशित हो रही है। न्यास के सचिव डॉ. महंथ राजीवरंजन दास, जो मेरे एकमात्र भानजे भी हैं, को बहुत-बहुत आशीर्वाद!

**-महेंद्र बेनीपुरी**

## अनुक्रमणिका

|                   |    |
|-------------------|----|
| प्राक्कथन         | 7  |
| पुस्तक-आंदोलन     | 12 |
| गेहूँ बनाम गुलाब  | 14 |
| जहाज जा रहा है    | 22 |
| चरवाहा            | 25 |
| फूलसुँघनी         | 28 |
| तितलियाँ          | 30 |
| नथुनिया           | 32 |
| नींव की ईंट       | 33 |
| गेंदा             | 37 |
| हरसिंगार          | 41 |
| गुलाब             | 44 |
| पुरुष और परमेश्वर | 47 |

|                     |     |
|---------------------|-----|
| ये मनोरम दृश्य      | 55  |
| मीरा नाची रे        | 80  |
| डोमखाना             | 85  |
| कंजड़ों की दुनिया   | 87  |
| चक्के पर            | 89  |
| गोशाला              | 91  |
| रोपनी               | 97  |
| घासवाली             | 106 |
| पनिहारिन            | 110 |
| बचपन                | 115 |
| किसको लिख रहे हैं   | 119 |
| छब्बीस साल बाद      | 122 |
| पहली वर्षा          | 126 |
| लागल करेजवा में चोट | 128 |
| लाल तारा            | 130 |

|                         |     |
|-------------------------|-----|
| हलवाहा                  | 138 |
| यह और वह                | 143 |
| हँसिया और हथौड़ा        | 151 |
| कुदाल                   | 154 |
| डुगडुगी                 | 156 |
| शहीदों की चिताओं पर     | 171 |
| आँधी में चलो            | 181 |
| कस्मै देवाय हविषा विधेम | 185 |
| इंकलाब जिंदाबाद         | 188 |
| नई संस्कृति की ओर       | 192 |
| कुछ क्रांतिकारी विचार   | 198 |
| रेलगाड़ी                | 203 |
| जवानी                   | 210 |
| कलाकार                  | 215 |
| दीप-दान                 | 222 |

|                         |     |
|-------------------------|-----|
| प्रकाशकीय               | 228 |
| मासानां मार्गशीर्षोऽहम् | 230 |
| पंडुक और भुजंगा         | 236 |
| तोरी फुलाइल : होरी आइल! | 241 |
| जब मंजरियाँ फूटीं!      | 254 |
| कुहू कुहू               | 261 |
| रिमझिम रिमझिम!          | 264 |
| जानि सरद-रितु खंजन आए!  | 274 |
| दीया जलाओ!              | 286 |
| बूढ़ा कुत्ता            | 289 |
| बाढ़ का बेटा            | 298 |
| बाँसुरी बजाए जा         | 311 |

## प्राक्कथन

श्री रामवृक्ष बेनीपुरी शब्द-शिल्पी थे, कलम के जादूगर थे। रूप और रेखाएँ ही नहीं, सूक्ष्म भावनाएँ भी उनके शब्दों से आकार ग्रहण कर पाठकों के मानस-पटल पर अंकित हो जाती हैं। उनके शब्द-चित्रों में मौलिकता और विविधता है। कथा, एकांकी, रिपोर्टाज, ललित निबंध, संस्मरण, लघु जीवनियाँ-सभी शब्द-चित्रों से सजे-सँवरे हैं। शब्द-चित्रों के आकर्षण में यदि कोई पाठक विधा का ज्ञान विस्मृत कर जाए कि वह कहानी पढ़ रहा है या संस्मरण, निबंध या रिपोर्टाज तो कोई आश्चर्य नहीं। वस्तुतः पाठक तब कलम के जादूगर के साथ होता है, उनकी भावनाओं और संवेदनाओं का साक्षात्कार करता होता है।

एक बार फिर उनके शब्द-चित्रों को आपके सामने लाने के लिए उनकी तीन अमर कृतियाँ-यथा ‘गेहूँ और गुलाब’, ‘लाल तारा’ तथा ‘सतरंगा धनुष’ यहाँ एक साथ प्रस्तुत की जा रही हैं।

यद्यपि ‘सतरंगा धनुष’ के ललित निबंधों का रचनाकाल सन् 1937 से 1939 तक ही है तथापि इनका पुस्तकाकार प्रकाशन बेनीपुरीजी के निधन के पश्चात् 1975 ई. में बेनीपुरी प्रकाशन, मुजफ्फरपुर से किया गया। इस संकलन में निम्नलिखित निबंध संकलित किए गए हैं-1. मासानां मार्गशीषांऽहम, 2. पंडुक और भुजुंगा, 3. तोरी

फुलाइल; होरी आइल!, 4. जब मंजरियाँ फूटी!, 5. कुहू-कुहू, 6. रिमझिम! रिमझिम!, 7. जानि सरद-रितु खंजन आए!, 8. दीया जलाओ, 9. बूढ़ा कुत्ता, 10. बाढ़ का बेटा और 11. बाँसुरी बजाए जा। इनमें ‘बाँसुरी बजाए जा’ 1954 ई. की रचना है और ‘नई धारा’ में तब प्रकाशित भी हो चुकी थी।

‘सतरंगा धनुष’ के निबंधों में उत्तरांचल (बिहार) की मिट्टी की सोंधी महक, लोक संस्कृति की जीवंतता, ग्राम्य परंपराओं की मूर्तता एवं प्रकृति के रंग-बिरंगे चित्र अपनी पूरी ऊर्जस्विता के साथ विद्यमान हैं इसलिए किशोरों, युवाओं, प्रौढ़ों और वृद्धजनों का सहज ही इनके प्रति आकर्षण देखने को मिला। वस्तुतः यह संकलन उत्तर बिहार की उबड़-खाबड़, किंतु सहज जिंदगी की उनकी सारी विषमताओं, रीति-रिवाजों, आस्था और विश्वासों का गद्यकाव्य है। यहाँ भाषा का चमत्कार नहीं, जिंदगी का सहज उच्छ्वास है।

‘लाल तारा’ के शब्द-चित्रों की रचना सन् 1938 से 1939 ई. के बीच हुई थी और इसका प्रकाशन बेनीपुरीजी के जीवन-काल में ही कई बार हो चुका था। इसमें निम्नलिखित 16 शब्दचित्र हैं-1. लाल तारा, 2. हलवाहा, 3. यह और वह, 4. हँसिया और हथौड़ा, 5. कुदाल, 6. डुगडुगी 7. शहीदों की चिताओं पर, 8. आँधी में चलो 9. कस्मै देवाय हविषाविधेम, 10. इंकलाब जिंदाबाद 11. नई संस्कृति की ओर, 12. कुछ क्रांतिकारी विचार, 13. रेलगाड़ी, 14. जवानी, 15. कलाकार तथा 16. दीपदान। ‘नई

संस्कृति की ओर’ स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद की रचना है। तीसरे संस्करण के नए रूप के संबंध में स्वयं बेनीपुरीजी ने लिखा है- ‘इसकी कुछ चीजें, जिनका गुलाबी रंग था, नई पुस्तकों में रख दी गई हैं, कुछ और चीजें इसमें जोड़ दी गई हैं, जो अन्यत्र संगृहीत थीं, किंतु जो आपने अंगारे के से रंग के कारण इसी के लिए उपयुक्त जँची।’ फिर उन्होंने लिखा है-

‘लाल तारा’ मेरे शब्दचित्रों का पहला संग्रह है। इसका पहला रूप उस जमाने में निकला था, जब मैं सिर से पैर तक लाल-लाल था।

वस्तुतः निविड़ अंधकार और घने कुहासे के परदे को फाड़कर पूरब के क्षितिज पर जगमग-जगमग करनेवाला लाल तारा नए प्रभात का, नए समाज का, नई मानवता का और नई संस्कृति का प्रतीक है। सघन अंधकार के बाद नया प्रभात आता ही है। लेखक की प्रगतिवादी दृष्टि नए प्रभात को देखने के लिए आकुल है। चूँकि आजादी के 65 वर्षों बाद भी नए प्रभात का स्वर्णोदय नहीं हुआ है, इसलिए ‘लाल तारा’ आज भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना कि गुलामी के दिनों में था। राजनीतिक होड़ और भौतिकतावादी आग्रह से युग संत्रस्त है, जिंदगी इन नारकीय यंत्रणाओं में छटपटा रही है, गुलाब की खुशबू-संस्कृति की सुकुमार दुनिया उजड़ रही है। बेनीपुरीजी के शब्दों में ‘गेहूँ हमारी आँखों पर इस कदर छाया हुआ है कि गुलाब को हम देखकर भी नहीं देख पाते।’ (‘नई संस्कृति की ओर’ से।)

आज़ादी मिलते ही बेनीपुरीजी की मनस्विता नए भारत, नए राष्ट्र के निर्माण की दिशा में उन्मुख होती है। वे गेहूँ और गुलाब के प्रतीकों के द्वारा नए समाज, नए मानव और नए राष्ट्र विषयक परिकल्पना को स्थापित करते हैं। सन् 1948 से सन् 1950 के बीच लिखे गए शब्दचित्रों का 'गेहूँ और गुलाब' शीर्षक के अंतर्गत श्रावण 1950 में प्रकाशित करते हैं और उद्घोषणा करते हैं कि 'यह पुस्तक है और आंदोलन भी।' वस्तुतः इस पुस्तक के शब्दचित्र 'हैंड कैमरा के स्नैपशॉट हैं', 'हाथीदाँत पर की तस्वीरों' हैं। इन तस्वीरों में एक आंदोलन की चेतना अनुस्यूत है, जो हमें भौतिकता की अंधगुफा से उठाकर सांस्कृतिक धरातल की ओर ले जाए।

श्रावण सन् 1953 के संस्करण में पाँच और शब्दचित्र जोड़ दिए गए। इस तरह कुल 25 शब्दचित्रों की इस पुस्तक ने कमाल की लोकप्रियता हासिल की। उन शब्दचित्रों के नाम हैं-1. गेहूँ और गुलाब, 2. जहाज जा रहा है, चरवाहा, 4. फूलसुँघनी, 5. तितलियाँ, 6. नथुनिया, 7. नींव की ईंट, 8. गेंदा, 9. हरसिंगार, 10. गुलाब, 11. पुरुष और परमेश्वर, 12. ये मनोरम दृश्य, 13. मीरा नाची रे, 14. डोमखाना, 15. कंजड़ों की दुनिया, 16. चक्के पर, 17. गोशाला, 18. रोपनी, 19. घासवाली, 20. पनिहारिन, 21. बचपन, 22. किसको लिख रहे हैं, 23. छब्बीस साल बाद, 24. पहली वर्षा और 25. लागल करेजवा में चोट। इनमें समाज, परिवार, व्यक्ति, संस्कृति, प्रकृति, किसान, मजदूर, समाज के अपवंचितों- डोम, कंजड़, घासवाली, पनिहारिन इत्यादि के चित्र हैं, जो पनी-

अपनी उपस्थिति और भंगिमाओं से विषमताओं, विद्रूपताओं और विसंगतियों को रेखांकित करते हुए यह संदेश देते हैं कि गेहूँ मानव के शरीर के लिए आवश्यक है, किंतु वह नारकीय यंत्रणा का माध्यम न बने; गुलाब मानव के मानस के लिए आवश्यक है, किंतु वह विलासिता, गंदगी और गलीज का साधन न बने। गेहूँ और गुलाब-दोनों में शिव और अशिव तत्त्व मौजूद हैं, हमें शिव को ग्रहण करना है, अशिव को नहीं।

तो आइए! हम आपके और महान् शब्द-चित्रकार श्रीरामवृक्ष बेनीपुरी के बीच बहुत समय तक दीवार नहीं बनना चाहते। उनके चित्रों को देखिए, भावों में भीगिए और उनकी परिकल्पनाओं की दिशा में कम-से-कम दो कदम बढ़िए।

-डॉ. राजेश्वर प्रसाद सिंह